6

गिरफ़्तारी

मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-52; लूका 22:47-53; यूहन्ना 18:2-12

''वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए आई'' (मत्ती 26:47)।

यहूदा को मालूम था कि यीशु कहां होगा। उसने यहूदी अगुओं से कहा कि वह उन्हें उस तक पहुंचाएगा। उसे यह भी मालूम था कि यीशु प्रार्थना कर रहा होगा, परन्तु वह यीशु को नहीं जानता था!

हम यीशु के बारे में जानते हैं, पर क्या हम वास्तव में उसे जानते हैं? यहूदा यीशु को कैसे नहीं जान पाया? हम यीशु को कैसे नहीं जान सकते? क्या हम सब के अन्दर एक ''यहूदा'' छिपा हुआ है? हमें मत्ती 26, मरकुस 14, लूका 22 और यूहन्ना 18 ध्यान से पढ़ना चाहिए।

यहूदा के पीछे-पीछे आ रही भीड़ पहुंच गई। भीड़ के लोग अपना आप भूल गए थे। नफ़रत सोचने की शक्ति खत्म कर देती है। सशस्त्र लोगों को यीशु की मृत्यु की आशंका थी। उन्होंने यह इनकार नहीं किया या उन्हें संदेह नहीं था कि यीशु ने लाज़र को मुर्दों में से जिलाया था। वास्तव में उन्होंने लाज़र की हत्या करने का भी विचार किया था (यूहन्ना 12:10)। यहूदा ने उनका मसला हल कर दिया था; उसने उन्हें यीशु को ढूंढ़ने का अवसर दिया, जब उसके आस-पास अनुयायियों की भीड़ नहीं थी (मत्ती 26:14-16; मरकुस 14:10, 11; लूका 22:3-5)।

कितना हैरान करने वाला है यह! सैकड़ों लोग हथियार लेकर एक निहत्थे नबी को पकड़ने के लिए आए थे। ''मैं हूं'' कहते हुए यीशु उठा और भीड़ के लोग भूमि पर गिर पड़े! (देखें यूहन्ना 18:3-6.)

यहूदा इन लोगों को यीशु तक लेकर आया था, तौ भी अभी भी उसने उसे ''हे, रब्बी'' ही कहा (मत्ती 26:49)। यीशु ने भी उसे ''मित्र'' ही कहा (मत्ती 26:50)। क्या यह ताना था? सम्भवतया नहीं! क्या इसने यहूदा को पछताने के लिए उकसाया? मुमकिन है।

घबराए हुए पतरस ने बल प्रयोग किया। उसने अपनी तलवार निकाली और मलखुस का दाहिना कान उड़ा दिया! पतरस को तलवार चलानी आती थी। उसे मालूम था कि तलवार किस पर चलाई जा सकती है (मलखुस, एक दास, न कि अधिकारी)। वह कह रहा था, ''तुम हमें मार सकते हो, पर तुम में से भी कुछ तो मरेंगे ही।'' यीशु ने पतरस को अपनी तलवार बन्द करने के लिए कहा और बड़े आराम से मलखुस का कान जोड़ दिया। (देखें मत्ती 26:51, 52; मरकुस

14:47; लूका 22:50, 51; यूहन्ना 18:10, 11.)

अपने आप को पाप से बचाने के लिए हमारे लिए यहूदा की दशा पर विचार करना आवश्यक है (मत्ती 27:3-10)। उसने यीशु को पकड़वाने के लिए लिया गया धन (चांदी के तीस सिक्के) वापस कर दिया, क्योंकि अब यह उसके लिए बेकार था। पकड़वाने वाला पछताया तो था, जो घमण्ड से होता है, परन्तु उसने मन नहीं फिराया, जो दीनता से होता है। उसने आत्महत्या कर ली।

यहूदा को अपनी गलती का अहसास हो गया, परन्तु वह अपने उद्धारकर्त्ता को नहीं देख पाया। उसने बाहर जाकर फंदा लगा लिया। किसी ने उसे उतारा भी नहीं (प्रेरितों 1:15-19)। पाप के परिणाम गम्भीर होते हैं। गद्दार ''अपने स्थान को चला गया'' (प्रेरितों 1:25) और पवित्र शास्त्र में दोबारा उसका नाम नहीं आया। यीशु ने कहा कि भला होता कि वह पैदा ही न होता (मत्ती 26:24; मरकुस 14:21)!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!